Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

रामचरित मानस

मनोज कुमार पाण्डेय

शोधार्थी

CT यूनिवर्सिटी लुधिआना पंजाब

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अनुसंधान विषय:-

१ - परिचय तथा गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन परिचय

२ - रामचरित मानस के पात्रो का परीक्षण

३ - संक्षेप में रामचरित मानस कथा

४ - अध्याय

५ - भाषा शैली

६ – निष्कर्ष

१ - परिचय तथा गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन परिचय :- रामचरित मानस १५ वी शताब्दी के कवि तुलसीदास द्वारा लिखित महाकाव्य है । जैसा कि बालकाण्ड में लिखा है । रामचरित मानस की रचना का आरम्भ अयोध्या में विक्रम सम्बत १६३१ (१५७४ ईस्वी) को रामनवमी के दिन (मंगलवार) किया था । रामचरित मानस को 2 वर्ष ७ माह २६ दिन का समय गीता प्रेस के संपादक श्री हनुमान प्रसाद पोछार जी के अनुसार लगा था ।संवत १६३३ (१५७६ ईस्वी) के मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष में रामविवाह के दिन पूर्ण किया था । इस महाकाव्य की भाषा अवधी है ।

रामचरित मानस में तुलसीदास जी श्रीराम के निर्मल एवं विशुद्व चरित्र का वर्णन किया था । महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत रामायण को रामचरित मानस का आधार माना जाता है । दोनों में ही राम के चरित्र का वर्णन है ।बाल्मीकी ने रामायण में राम को एक सांसारिक

व्यक्ति के रूप में दर्शाया है । जबकि तुलसीदास जी रामचरित मानस में राम को भगवान विष्णु का अवतार माना है ।

मानस सात खंडो में विभक्त है । बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड , अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड (युद्धकाण्ड)और उत्तरकाण्ड छंदो की संख्या के अनुसार बालकाण्ड सबसे बड़ा तथा किष्किन्धाकाण्ड सबसे छोटा है ।इसमे अवधी के अलंकार का अच्छा प्रयोग है ।विशेषतः अनुप्रास अलंकार ।

इसको हिन्दुओ का पवित्र ग्रन्थ भी माना जाता है । तथा प्रत्येक हिन्दू की अनन्य आस्था भी है गोस्वामी तुलसीदास (१५११ -१६२३)हिंदी साहित्य के महान संत कवि थे रामचरित मानस इनका गौरव ग्रन्थ है इन्हे आदि काव्य के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का अवतार भी माना जाता है ।

इनका जन्म रामबोला में जो कि कासगंज उत्तर प्रदेश में है । १५११ ईस्वी (१५६८ सम्बत) में हुआ था इनके गुरु नरहरिदास थे । गोस्वामी , अभिनवबाल्मीकी आदि सम्मान प्राप्त थे । राम रचित मानस , विनय पत्रिका , दोहावली , कवितावली , हनुमान चालीसा , वैराग्य संदीपनि , जानकी मंगल , पार्वती मंगल इत्यादि साहित्यिक कार्य इनके द्वारा किया गया । धर्म से हिन्दू एवं वैष्णव दर्शन से सम्बन्ध रखते थे । इनका मुख्य कथन ये है ।

सीयु राम मय सब जग जानी ।

करउ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

(रामचरित मानस 1.8.2)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

श्री राम चरित मानस का कथानक रामायण से लिया गया है । यह लोकग्रन्थ है । तथा उत्तर भारत में भाव के साथ पढ़ा जाता है । " विनय पत्रिका " उनका अन्य महत्वपूर्ण काव्य है । महाकाव्य श्री राम चरित मानस को विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में ४६ वा स्थान दिया गया है । तुलसीदास जी रामानंदी के वैरागी साधु थे । कुछ समय राजापुर रहने के बाद काशी चले गये तथा वहा की जनता को राम कथा सुनाने लगे । एक दिन कथा सुनाते वक्त मनुष्य वेष में प्रेत मिला , जिसने हनुमान का पता बताया तथा हनुमान जी से मिलकर आग्रह करने करने के बाद श्री रघुनाथ जी का दर्शन चित्रकूट में हुआ । तथा अनेक ख्याति के बाद १६२३ ईस्वी (१६८० सम्बत) में देहावसान हो गए ।

न मिटै भवसंकटु दुर्घट है तप , तीरथ जन्म अनेक अटो ।

कलिमे न बिरागु , न ग्यानु कहूँ , सबु लागत फ़ोकट झूठ -जटों ।।

नटु ज्यों जनि पेट - कुपेटक कोटिक चेटक - कौतुक - ठाट डटो ।

तुलसी जो सदा सुखु चाहिअ तौ , रसना निसिबासर रामु रटो ।।

(तुलसीदास गोस्वामी, कवितावली, उत्तरकाण्ड पद संख्या -८१)

२ - रामचरित मानस के पात्रो का परीक्षण :-

रामचरित मानस भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है । इसकी लोकप्रियता अद्वितीय है । इसकी अवधि साहित्य (हिंदी साहित्य) की एक महान कृति माना जाता है । इसे सामान्यतः तुलसी रामायण कहते है । रामचरित मानस भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है । उत्तर भारत में "रामायण " के रूप में बहुत से लोगो द्वारा प्रतिदिन पढ़ा

जाता है । शरद नवरात्री में इसके सुन्दरकाण्ड का पाठ नौ दिनों तक किया जाता है । रामायण मंडलो द्वारा मंगलवार और शनिवार को इसके सुन्दरकाण्ड का पाठ किया जाता है ।

धर्म	हिन्दू धर्म
लेखक	तुलसीदास
भाषा	हिंदी बोली अवधि
श्लोक	10,902

श्री रामचरित मानस के नायक श्री राम है जिनको एक मर्यादा पुरसोत्तम के रूप में दर्शाया गया है । जो कि अखिल भारतीय ब्रह्माण्ड के स्वामी श्री हरि नारायण भगवान के अवतार है जबकि महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण में श्री राम को एक आदर्श चरित्र मानव के रूप में दर्शाया गया है इसमें किसी भी प्रकार की बिपत्ति में किस प्रकार जिया जाये ये दिखाया गया है । तुलसी के राम सर्वशक्तिमान होते हुए भी मर्यादा पुरसोत्तम है । गोस्वामी जी ने राम चरित का अनुपम शैली में दोहो , चौपाइयों सोरठों तथा छंद का आश्रय लेकर वर्णन किया है । तुलसीदास जी को मध्ययुग का जननायक माना जाता है । इन्होने मानव के लिए भक्तिपूर्ण सामाजिक संस्कृति प्रधान , मार्गदर्शक ग्रन्थ " रामचरित मानस " की रचना की । तुलसीदास आदर्श एवं उच्च कोटि के रचनाकार है । आचार्य शुक्ल जी के अनुसार तुलसीदास जी ने बारह ग्रंथो की रचना की थी । जिनमे से रामचरित मानस महाकाव्य है । तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस वैश्विक साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है । तुलसीदास जी ने अपनी काव्य रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए मानस में लिखा है कि वे स्वतः सुख हेतु

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

रघुनाथ गाथा लिख रहे है । लेकिन उनकी सारी रचनाये लोकहित की दृस्टि से लिखी गयी है । रामकथा का आदर्श प्रस्तुत करते हुए समाज परिवर्तन की प्रेरणा देते है । तुलसीदास जी राम के अवतार का कारण बताते है ।

जब -जब होई धर्म की हानि ।

बादही असूर महा अभिमानी ।

तब तब धरि प्रभु मनुज शरीरा ।

हरहि सफल सज्जन भव पीरा ।

भारतीय जीवन के आदर्श मूल्यों की व्याख्या मानस में उपस्थित है ।

मानस के नायक श्रीराम सर्वप्रथम एक आदर्श पुरुष है । जो मानव कल्याण के लिए धरती पर पैदा हुए वह धैर्यवान , बलवान , तथा गंभीर है ।

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।

श्रीराम जी का व्यक्तित्व शील , शक्ति , और सौंदर्य का अगाध भंडार है । वह मर्यादा पुरुषोत्तम है । सनातन मूल्यों के रीति के पालक है ।

लक्ष्मण चपल और उग्र स्वाभाव के पात्र है । भाई प्रेमी है । भरत का चरित्र शीलता की अंतिम कसौटी है । भाई की भक्ति का अद्वितीय आदर्श है । मानवीय चरित्र भी इससे ऊपर नहीं जा सकता । भरत का चरित्र साफ सुथरा है । जिसकी वजह से प्रकृति भी उनके प्रति सहानुभूति रखती है ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

" जँह जँह जाय भरत रघुराया,

तँह तँह मेघ करहि नवछाया "

राजा दशरथ सत्यवादी धर्मनिष्ठ राजा है । जो वचन देकर धर्म तथा प्राण देकर पुत्र प्रेम की रक्षा करते है । रावण , मेघनाथ जैसे राक्षसी प्रवृति के पात्र है । तथा अहंकारी भी है । जो धर्म - नीति के रास्ते से भटक चुके है । ऐसे पात्रो का अंत हम सभी को बुराई तथा असत्य की हार से अवगत कराता है । स्त्री पात्रो में सीता आदर्श भारतीय नारी है । जो कर्तव्य और पति के साथ वन जाने हेतु तर्क पूर्ण उत्तर द्वारा राम को भी निरुत्तर कर देती है ।

जिय बिनु देहु ,नदी बिनु वारि ।

तैसिये नाथ पुरुष विनु नारी ।

कँह चन्द्रिका चंद्र तजि जाई ।

कौशल्या सुमित्रा ममतामयी माँ का प्रतिनिधित्व करती है । कैकेयी को अंत में पश्चताप करने के सिवाय कुछ नहीं बचता है । तथा बाद में समझ आती है ।

"लाख सीय सहित सरल दोउ भाई

कुटिल रानी पछितानि अघाई ।"

चित्रकूट की सभा में राम सर्वप्रथम कैकेयी के चरण स्पर्शकर उन्हें अपराध बोध से मुक्त करते है । तुलसीदास जी समस्या के साथ -साथ समाधान भी बताते है। जो व्यक्ति जिस प्रकार का कर्म करता है । ठीक उसी प्रकार का फल पाता है। इस महाकाव्य ने तुलसीदास जी विभिन्न

संस्कृति से जुड़े पात्रो को भी ठीक प्रकार का स्थान दिया है । दानव ,नर ,किन्नर, वानर , भालू , जांबवान जटायु आदि के साथ -साथ भील ,क़ौल , किरात शबरी निषाद केवट सभी से सम्बाद दिखाया है । इस प्रकार आज के समाज के लिए एक प्रेरणा भी है कि समाज के हाशिये के सभी वर्गों से प्रेम और सम्मान दिखाना अत्यंत मानवीय और प्रेरणाप्रद प्रतीत होता है रामचरित मानस में प्रमुख रूप से शांत रस है । इसके साथ - साथ अन्य रसो को भी समावेश किया गया है । अन्य रसो में हास्य रस भी मिलता है । मानस में भक्ति , दर्शन , आचार, धर्म ,नीति , संस्कृति सभी भाव उत्कृष्ट रूप से सम्मिलित है ।

ग्रियर्सन के अनुसार " भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करना जानता हो " तुलसी का मानस समन्वय की विराट चेष्टा है । अपनी युग की आवश्यकताओ के अनुसार महाकवि ने समन्वय का प्रयास किया है । उन्होंने द्वैत - अद्वैत , निर्गुण - सगुण , विद्या - अविद्यामाया, जीव का भेद ,अभेद ,कर्म, ज्ञान भक्ति , ब्राह्मण , शूद्र , शैव , शाक्त , वैष्णव , समाज संस्कृति संगम के साथ -साथ भाव पक्ष और कलापक्ष को भी समन्वित किया है ।

" गिरा अरथ जल - बीचि सैम कहियत भिन्न न भिन्न

कविता करके न तुलसी लसे ,कविता लसि पा तुलसी की कला "

यह अत्यंत सटीक तथ्य है ।

सगुनहि अगुनहि नहि कुछ भेदा । गावहि मुनि पुरान बुध बेदा ।।

अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होइ ।।

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे ।जलु हिम उपल बिलग नहि जैसे ।।

(तुलसीदास गोस्वामी, रामचरित मानस पद संख्या -११६)

३ - संक्षेप में रामचरित मानस कथा :-

मनु और सतरूपा परमब्रह्म की असीम तपस्या कर रहे थे । कई वर्ष तपस्या करने के बाद स्वयं शंकर जी ने पार्वती से कहा कि ब्रह्मा , विष्णु और मै कई बार मनु और सतरूपा के पास गए , वरदान देने के लिए -

" बिधि हरि हर तप देखि अपारा, मनु समीप आये बहु बारा"

कहा की जो तुम वर मांगना चाहते हो मांग लो , लेकिन मनु सतरूपा को पुत्र के रूप में स्वम् परमब्रह्म को ही मांगना था , फिर हम लोगो से वर कैसे मांगते । प्रभु श्रीराम तो सर्वज्ञ है ।तथा भक्तो की इच्छाओ को खुद समझ जाते है । कहा जाता है कि २३ वर्ष व्यतीत होने पर प्रभु श्रीराम के द्वारा स्वतः आकाशवाणी होती है ।

प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी , गति अनन्य तापस नृपरानि ।

मांगु मांगू बरु भई नभ बानी , परम गंभीर कृपामृत सानी ।।

इस आकाश वाणी को जब मनु सतरूपा सुनते है तो ख़ुशी से झूम उठते है । तब उनकी वंदना करते हुए कहते है ।

"सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु, बिधि हरि हर बंदित पद रेनू ।

सेवत सुलभ सकल सुखदायक , प्रनतपाल सचराचर नायक ।।

अर्थात जिनके चरण कमलो की वंदना हरि और हर यानी ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनो लोग करते है । जिनके स्वरुप की चर्चा प्रसंशा सगुण एवं निर्गुण दोनों को मानने वाले लोग करते है । उनसे वे क्या वर माँगे ? इस प्रकार तुलसी दास जी ने उन लोगो को भी सलाह दी कि श्रीराम की आराधना करना चाहिए चाहे सगुण हो या निर्गुण ब्रह्म के उपासक हो ।

रामचरित मानस में मानव जीवन के सारे प्रश्नो का उत्तर समाहित है । इस प्रश्नावली की खासियत यह है कि जब भी किसी को अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो भगवन श्रीराम का ध्यान करते हुए ध्यानमग्न होने पर मिल जाता है ।

सुनु सिय सत्य असीस हमारी ।

पूजिहि मन कामना तुम्हारी ।।

उक्त चौपाई बालकाण्ड में श्री मति सीता जी गौरी पूजन के प्रसंग में है । गौरी जी ने सीता जी को आशीर्वाद दिया है ।

फल - प्रश्न पूछने वाले का प्रश्न ठीक है । कार्य सिद्ध हो जायेगा ।

प्रविसि नगर कीजे सब काजा ।

ह्रदय राखि कोशलपुर राजा ।।

उक्त चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है ।

फल - भगवान का स्मरण करके कार्य शुरू करने से सफलता मिलती है ।

उधरहि अंत न होइ निबाहू ।

कालनेमि जिमि रावन राहू ।।

उक्त चौपाई में बालकाण्ड के सत्संग का वर्णन है ।

फल - इसमें भलाई नहीं है । कार्य की सफलता में संदेह है ।

बिधि बस सुजन कुसंगत परही ।

फनि मनि सैम निज गुन अनुसरहीं ।।

उक्त चौपाई में बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग - वर्णन के प्रसंग से है ।

फल - खोटे मनुष्यो का संग छोड़ दे । कार्य पूर्ण होने में संदेह है ।

सुफल मनोरथ होहु तुम्हारे ।

रामु लखनु सुनि भये सुखारे ।।

उक्त चौपाई बालकाण्ड में पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्र जी का आशीर्वाद है ।

फल - प्रश्न बहुत सही है । कार्य सिद्ध होगा ।

श्रीराम जी के जीवंत जीवन दर्शन श्रीराम चरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम चरित -मानस में श्रीरामसालाका प्रश्नावली की रचना भी की । श्रीराम प्रश्नावली

ऐसी पहेली है ।जिसमे सारी समस्याओ का समाधान है । इस प्रश्नावली की खासियत यह है कि जब भी किसी को अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो भगवान श्रीराम

का ध्यान रखकर आँख बंद करके प्रश्न का चिंतन करते हुए प्रश्नावली पहेली में अपने दाहिने हाथ की उंगली से घुमाकर एक खाने में रोक दे ।

जिस खाने में हाथ रुका है उसे अलग कागज में लिखे तथा उसी खाने से नवे खाने तक आगे बढे तथा नवा खाना वाला शब्द लिख ले तथा फिर प्रक्रिया दोहराये एवं लिखे ।

ऐसा करते जाये तब तक , जब तक सर्वप्रथम वाले निशान तक न पहुंच जाये । ऐसा करने पर एक चौपाई तैयार हो जाती है ।

उदाहरणतः म शब्द पर अंगुली रखी इसके बाद नवे खाने पर गिनते हुए शब्दों को कागज पर लिखे ।और यही प्रक्रिया दोहराते हुए पहले तक आये तब यह एक चौपाई बनी ।

होइहिसोई जो राम रचि राखा । कोकरि तर्क बढ़ा वैसाखा ।।

उक्त चौपाई बालकाण्ड के अंतर्गत शिव और पार्वती के संवाद से है ।

फल - प्रश्नकर्ता को इस उत्तर स्वरुप , कार्य होने में संदेह है । अतः उसे भगवान पर छोड़ देना उचित है ।

सुनु सिय सत्य असीस हमारी ।

पूजिहि मन कामना तुम्हारी ।।

उक्त चौपाई बालकाण्ड में श्री सीता जी के गौरी पूजन के प्रसंग में है । गौरी जी ने सीता जी को आशीर्वाद दिया है ।

फल - प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है । कार्य सिद्ध होगा ।

बिधि बस सुजन कुसंगत परही ।

फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।।

उक्त चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग - वर्णन के प्रसंग में है ।

फल - खोटे या गलत मनुष्य का साथ छोड़ दे ।

बरुन कुबेर सुरेस समीरा ।

रन सन्मुख धरि काहु न धीरा ।।

उक्त चौपाई लंकाकाण्ड में रावन की मृत्यु के बाद मंदोदरी के विलाप का है ।

फल- कार्य पूर्ण होने में संदेह है ।

४ – अध्याय:-कुल सात अध्याय है ।

१- बालकाण्ड

२- अयोध्याकाण्ड

३- अरण्यकाण्ड

४- किष्किन्धाकाण्ड

५- सुन्दरकाण्ड

६- लंकाकाण्ड (युद्धकाण्ड)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

७- उत्तरकाण्ड

रामायण एक भारतीय ग्रन्थ है । इसमें रघुकुल के राजा श्रीराम की कहानी है ।

१- बालकाण्ड :-

अयोध्या नगरी में दशरथ नामक राजा हुए जिनकी तीन रानिया कौशल्या, कैकेयी , सुमित्रा थी । इनके पुत्र नहीं थे तब ज्यादा समय व्यतीत हो जाने पर गुरु वशिष्ट से पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया जिसको ऋगी ऋषि ने ठीक प्रकार से सम्पन्न कराया । खुश होकर कहा जाता है कि अग्नि देव स्वम् प्रकट हुए तथा खीर -पायस दिए तथा यह तीनो रानिओ में बाँट दिया गया । खाने के बाद कौशल्या के गर्भ से राम ,कैकेयी से भरत तथा सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म हुआ ।

राजकुमारों के बड़े होने पर विश्वामित्र अपने यज्ञ को पूर्ण करवाने के लिए बक्सर ले गए जो की बिहार राज्य में वर्तमान में है जो की राक्षःसो के द्वारा रोका जाता था । ताड़का सुबाहु जैसे राक्षस यज्ञ को पूर्ण होने नहीं दे रहे थे । ताड़का सुबाहु जैसे राक्षसों को राम ने मारा और मारीच को बानो के माध्यम से समुद्र पार भेज दिया । धनुष यज्ञ के लिए राजा जनक के निमंत्रण पर विश्वामित्र राम , लक्ष्मण के साथ मिथिला पहुंचे । रास्ते में गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का उद्धार किये जो पति के द्वारा श्रापित थी । तथा राजा जनक के प्रतिज्ञा का पालन कर शिवधनुष तोड़कर सीता जी के साथ विवाह किया । परशुराम जी शिव जी की धनुष टूटने से गुस्सा भी हुए तथा काफी समझाने पर माने तथा इनके विवाह के साथ ही गुरु वशिष्ट जी ने भरत का मांडवी से , लक्ष्मण का उर्मिला से और शत्रुघ्न का श्रुतकीर्ति से करवा दिया ।

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार ।

तुलसी भीतर बाहरहु जौ चाहसि उजियार ।।

(तुलसीदास गोस्वामी , रामचरित मानस , बालकाण्ड , पद संख्या -२१)

जौ नृप तनय त ब्रहम किमि नारि बिरह मति भोरि।

देखि चरित महिमा सुनत भ्रमहि बुद्धि अति मोरि ।।

(तुलसीदास गोस्वामी, रामचरित मानस, बालकाण्ड)

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।

करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ।।

२- अयोध्याकाण्ड:-

श्रीराम के विवाह के कुछ समय बाद राम का राजयभिषेक करना चाहा दशरथ ज़ी ने, जिससे देवता लोगो को इसकी चिंता हुयी कि भगवान राम के राजा बनने के बाद रावण का वध कौन करेगा । इसप्रकार आग्रह करने पर देवताओ के , सरस्वती जी मंथरा के मुख में वश गयी तथा बुद्धि पलट दी जिसकी वजह से मंथरा के सलाह से कैकेयी कोप भवन चली गयी । दशरथ के मनाने पर राम को १४ वर्ष का वनवास एवं भरत राजा , माँगा गया । इसके बाद राम के साथ सीता एवं लक्ष्मण साथ -साथ बन को चल दिए । यहाँ उर्मिला का क्या कसूर था की विना पति के १४ वर्ष रही ये सवाल यहाँ जरूर उठता है । रास्ते में निषादराज के यहाँ रुके तथा बाद में केवट से पार उतरकर प्रयागराज पहुंचे वहाँ भरत मुनि से मिले तथा

यमुना स्नान करके वाल्मीकि ऋषि के आश्रम पहुंचे । वाल्मीकि से मंत्रणा करके राम -सीता , लक्ष्मण चित्रकूट में निवास करने लगे । अयोध्या में दशरथ का ,पुत्र राम के वन जाने के वियोग में स्वर्गवास हो गया तथा भरत के आने पर कैकेई के कार्यानुसार फल मिला साथ - साथ मंथरा को भी , उसके बाद अंतिम संस्कार किया गया भरत के द्वारा ।इसके बाद राम को मनाने भरत बन गए लेकिन राम पिता आज्ञा का पालन करने के वशीभूत हो गए उसके बाद भरत उनकी चरन पादुका को लेकर अयोध्या आकर पादुका को राजा की तरह पूजने लगे एवं खुद भी वनवासी की तरह कुटिया बनाकर महल से बाहर रहने लगे ।

पात भरी सहरी , सकल सुत बारे -बारे

केवटकी जाति , कछु वेद न पढ़ाइहौं ।

सबु परिवारु मेरो याही लागि , राजा जू

हौ दिन बिलहीन , कैसे दूसरी गढ़ाइहौ ।।

(तुलसीदास गोस्वामी, कवितावली अयोध्याकाण्ड पद संख्या -८)

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांग

सीतासमारोपितवामभागम ।

पाणौ महासायकचारुचापम

नमामि रामं रघुवंशनाथम ।।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

३-अरण्यकाण्ड या जंगलकाण्ड:-

कुछ समय बाद चित्रकूट से अत्रि ऋषि के आश्रम पहुंचे । आगे बढ़ने पर शरभंग मुनि मिले तथा से मिलने की इच्छा पूर्ण होते ही मुनि अपने शरीर को जला दिए । रास्ते में बहुत हड्डिया थी मर्यादा पुरषोत्तम राम के, जो कि ऋषि मुनियो की थी तब राम प्रतिज्ञा किये कि पूरी पृथ्वी से राक्षसों का सफाया कर देंगे । आगे बढ़ने पर अगत्य आदि ऋषियों से मिले तथा दण्डक वन पहुंचे जहा जटायु से मिले ।इसके बाद श्रीराम ने पंचवटी को अपना निवास बनांया । पंचवटी से कहानी बदली तथा शूपर्नखा जो लंका के राजा रावण की बहन थी पंचवटी आयी तथा लक्ष्मण द्वारा नाक शूपर्णखा का काटा गया । शूप्रणखा रावण से लंका जाकर शिकायत की तथा बदला लेने के लिए प्रेरित करने के बाद रावण द्वारा सीता जी का छल पूर्वक हरण करके लंका ले जाया गया । जटायु द्वारा बचाये जाने पर रावण द्वारा पंख ,जटायु का काटकर गिरा करके सीता को लंका ले गया । हाँलाकि जटायु जानते थे की रावण से युद्ध नहीं जीत सकते फिर भी लड़े मर्यादा के लिए की दुनिया कहेगी की गलत होता देखकर कायर की तरह बैठा रहा ।तथा राम लक्ष्मण ,सीता की खोज में जा रहे थे तब जटायु घायल मिले एवं सीता जी को रावण द्वारा दक्षिण दिशा में जाने का बताये , उसके बाद शरीर त्याग दिए एवं राम के द्वारा जटायु का अंतिम संस्कार किया गया । इसके बाद राम - लक्ष्मण आगे बढे तब दुर्वासा ऋषि के श्राप के कारण राक्षस बने गन्धर्व का वध करके उद्धार किये तथा सबरी के जूठे बेर खाकर उनके तपस्या का फल दिया ।

१- अवगुनमूल सूलप्रद प्रमदा सब दुःख खानि ।

तातें कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जिय जानि ।।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(तुलसीदास गोस्वामी, रामचरित मानस, अरण्यकाण्ड पद संख्या -४४)

२- रघुपति चित्रकूट बसि नाना । चरित किये श्रुति सुधा समाना ।।

बहुरि राम अस मन अनुमाना ।होइहि भीर सबहि मोहि जाना ।।

३- सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई । सीता सहित चले दौ भाई ।।

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ । सुनत महामुनि हरषित भयऊ ।।

४ - किष्किन्धाकाण्ड :-

जब भगवान राम ऋष्यमूक पर्वत के पास पहुंचे । जहाँ सुग्रीव मंत्रियो के साथ बालि के डर से रहते थे । राम -लक्ष्मण को आता देख बालि का दूत समझ कर सुग्रीव ने हनुमान को पता लगाने के लिए भेजा । हनुमान ब्राह्मण का वेष लेकर राम के पास पहुंचे एवं सही पता लगने पर सुग्रीव से मित्रता करा दिए हनुमान ने । बताने पर सुग्रीव आश्वासन दिए कि सीता जी मिल जाएगी तथा सहायता भी देंगे । और अपने भाई बालि के द्वारा किये गए अत्याचार के बारे में बताया । राम ने बालि का छलपूर्वक वध करके सुग्रीव को किष्किंधा का राजा तथा बालि के पुत्र अंगद को युवराज का पद दे दिया ।

राज्य मिलने पर विलास में सुग्रीव विलप्त हो गए । तथा वर्षा ऋतु व्यतीत होने पर राम की नाराजगी के बाद सीता की खोज के लिए सेना भेज दिए । बानरो की एक तपस्वनी से गुफा में भेट हुआ तथा तपस्वनी ने योग शक्ति से समुद्र तट पर सबको पंहुचा दिया ।तथा सम्पाति ने बताया कि रावण ने सीता जी को लंका में अशोक वाटिका में रखा है । जामवंत ने हनुमान को समुद्र लांघने के लिए प्रेरित किया ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

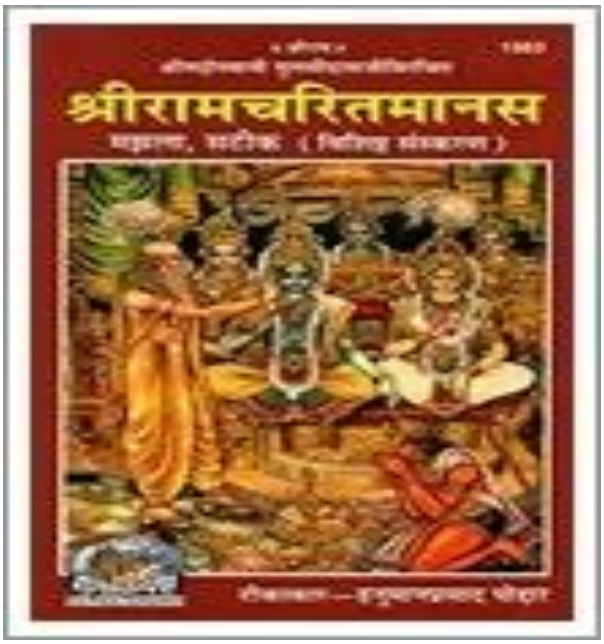

१- सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकही बान ।

ब्रह्म रूद्र सरनागत गए न उबरिहि प्राण ।।

(तुलसीदास गोस्वामी, रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड, दोहा संख्या -६)

२- आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्बत निअराया।।

तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा।।

५ - सुन्दरकाण्ड :-

इसमें रामायण की सुंदरता है । हनुमान लंका की ओर प्रस्थान किये तथा रास्ते में सुरसा मिली तथा परीक्षा लेकर सामर्थ्यवान माना तथा आशीर्वाद दी । मार्ग में छाया पड़ने वाली राक्षसी का वध किया एवं लंकिनी पर प्रहार करके लंका में प्रवेश किये विभीषन से भेट हुयी

। जब हनुमान अशोकवाटिका पहुंचे तब रावण, सीता जी को धमका रहा था । एकांत पाकर हनुमान ,राम की मुद्रिका सीता जी को दिए । अशोकवाटिका का विध्वंश करके अक्षय कुमार का वध किये । मेघनाथ के द्वारा ब्रह्मफांस के द्वारा पकड़कर लाये जाने तथा हनुमान के पूछ में आग लगाने के बाद पूछ बड़ा करके लंका को जला दिए । तथा पूछ जलने पर समुद्र में कूद कर आग सांत किये पूछ का , इसके बाद चूरामणि लेकर, राम के पास सन्देश लेकर सीता जी का पहुंचे । इसके बाद विभीषण को भगवान राम ने लंका का राजा घोषित किये । राम ने समुद्र को क्रोध से भयभीत किया तथा नलनील की सहायता से पुल बनाया ।

१- जामवंत के वचन सुहाए । सुनि हनुमंत ह्रदय अति भाए ।।

२- जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा । तासु दून कपि रूप देखावा ।।

सत जोजन तेहिं आनन् कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ।।

६ - लंकाकाण्ड (युद्धकाण्ड) :-

मर्यादा पुरषोत्तम राम ने रामेश्वरम की स्थापना करके लंका पहुंचे तथा समुद्र पार लंका पहुंच कर डेरा डाल दिये इस सन्देश को सुनकर रावण व्याकुल हो गया तथा मंदोदरी के मना करने पर भी नहीं माना । राम सुवेल पर्वत पर वास किये । इसके बाद अंगद राम का दूत बनकर रावण के पास गए तथा रावण को राम के सरण में जाने सन्देश दिए । किन्तु रावण नहीं माना । शांति का सारा प्रयास विफल होने पर युद्ध हुआ । लक्ष्मण शक्तिवाण से मूर्क्षित हुए । उपचार के लिए सुषेण वैध को हनुमान द्वारा लाया गया । वैध के कहने पर संजीवनी भी तय समय के अंदर लाये संजीवनी नहीं पहचाने जाने की स्थिति में पर्वत को ही ले आये । हनुमान को राक्षस का संदेह पाकर भरत जी वान से प्रहार किये तथा पता चलने पर वान

तेजी से लंका भेजा । औषधि मिलने पर लक्षमण जी ठीक हुए । रावण युद्ध की समस्या को देखकर कुम्भकरण को जगाया कुम्भकरण भी रावण को राम की सरण जाने का रास्ता बताया, प्रयास असफल होने पर युद्ध किया तथा राम के हाथो मारा गया । तथा लक्ष्मण ने मेघनाथ को मारा, राम और रावण के मध्य अनेको घोर युद्ध हुए और अंत में रावण, राम के हाथो मारा गया । विभीषण को लंका का राज्य सौप कर राम -सीता और लक्ष्मण के साथ पुष्पक विमान पर चढ़कर अयोध्या के लिए प्रस्थान किये ।

१- यह लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ।।

२- विनय ना मानत जलध जड़ गए तीन दिन बीति।

बोले राम सकोप तब भय बिनु होय न प्रीत।।

3- श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान ।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ।।

4- बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ।।

चली सेन कछु बरनि न जाई । गर्जहि मर्कट भट समुदाई ।।

५- प्रभुहि बिलोकहिं टरही न टारे । मन हर्षित सब भये सुखारे ।।

तिन्ह की ओट न देखिअ बारी । मगन भये हरी रूप निहारी ।।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

७- उत्तरकाण्ड :-

उत्तर कांड रामकथा का उपसंहार है । सीता राम , लक्ष्मण समस्त वानर सेना के साथ राम अयोध्या वापस पहुंचे । राम का भव्य स्वागत हुआ तथा वेदो और शिव स्तुति के साथ राम का राज्याभिषेक हुआ । अव्यागतो की विदाई हुयी । राम ने प्रजा को उपदेश दिया और प्रजा ने कृतज्ञता प्रकट की । चारो भाइयो के दो - दो पुत्र हुए । राम राज्य एक आदर्श बन गया । इस प्रकार तुलसीदास जी उत्तरकाण्ड में श्रीराम - वशिष्ट सम्बाद , नारद जी का अयोध्या आकर रामचंद्र जी का स्तुति करना , इस प्रकार उपरोक्त वर्णन के साथ रामचरित मानस समाप्त हो गया ।

खेती न किसान को , भिखारी को न भीख बलि ,

बनिकको बनिज , न चाकर को चाकरी ।

जीविका बिहीन लोग सघिमान सोंच बस ,

कहै एक एकंन सो " कहाँ जाई का करी ?"

(तुलसीदास गोस्वामी, कवितावली, उत्तरकाण्ड पद संख्या -९७)

दोहा :-

१- रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।

जह तह सोचहि नारि नर कृस तन राम बियोग ।।

२- सगुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर ।

प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ।।

३- भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बॉरहिं बार ।

जानि सगुन मन हरष अति लागे करन बिचार ।।

५ - भाषा शैली :-

रामचरित मानस के भाषा के बारे में विद्वानों में मतभेद है । कुछ विद्वान अवधी तो कुछ भोजपुरी मानते है । कुछ लोग भोजपुरी एवं अवधी का मिला जुला मानते है । कुछ विद्वान बुंदेली भी मानते है ।

तुलसीदास जी ने भाषा को न्य स्वरूप प्रदान किया । यह अवधी नहीं बल्कि वही भाषा थी जो प्रकृति से शौर सेनी अपभ्रंश होते हुए , १५ दशकों तक समस्त भारत की साहित्यिक भाषा रही ब्रजभाषा के नए रूप मगधी , अर्धमगधी आदि से संमिश्र होकर आधुनिक हिंदी की ओर बढ़ रही थी , जिसे भाखा कहा गया एवं जो आधुनिक हिंदी " खड़ीबोली " का पूर्वरूप थी ।

तुलसीदास जी "ग्राम्यगिरा " के पक्षधर थे परन्तु वे जायसी की गवारु भाषा अवधी के पक्षधर नहीं थे । तुलसीदास की तुलना में जायसी की अवधी भाषा ज्यादा शुद्ध है । स्वामी जी अन्य अनेक ग्रन्थ जैसे " पार्वतीमंगल " तथा "जानकीमंगल " अच्छी अवधी में है । इनको संस्कृत का भी ज्ञान है । चित्रकूट स्थित अंतरराष्ट्रीय मानस अनुसन्धान केंद्र के प्रमुख स्वामी रामभद्राचार्य ने रामचरित मानस का संपादन किया है ।स्वामी जी ने लिखा है कि कर्तृवाचक ऊकार शब्दों की बहुलता है । उन्होंने इसे अवधी भाषा की प्रकृति के विरुद्ध बताया

था । इसी प्रकार उन्होंने उकार को कर्मवाचक शब्द का चिन्ह मानना भी अवधी भाषा के विपरीत बताया है । स्वामी जी अनुनाशिको को विभक्ति को द्योतक मानने को भी असंगत बताते है -

“जब ते राम व्याहि घर लाये ।

स्वामी रामभद्राचार्य ने अवधी भाषा के विरुद्ध कतृर्वाचक शब्दों को बताया है तथा "ंह " के प्रयोग को भी अनावश्यक बताया है । उनके अनुसार नकार के साथ हकार जोड़ना ब्रजभाषा का प्रयोग है । अवधी का नहीं । स्वामी जी के अनुसार मानस की उपलब्ध प्रतियो में तुम के स्थान पर "तुम्ह" और "तुम्हि्ह" शब्दो के जो प्रयोग मिलते है । वे अवधी मे नहीं होते है । इसी प्रकार "श" न तो प्राचीन अवधी की ध्वनि है और न ही आधुनिक अवधी की ।

६ – निष्कर्ष :-

हमारा भारत देश धार्मिक प्रकृति का देश है । यहाँ पर सभी धर्म के लोग रहते है तथा हिन्दू धर्म को मानने वाले लोगो में मानस के प्रति आदर सम्मान है । तथा ज्ञान प्राप्त करके जीवन को सफल बनाते है । जिसप्रकार से हमारे देश में वेदो और शास्त्रों ने इंसान के भविष्य को सुधारने के लिए कई मंत्र दिए । उसी प्रकार मानस ने मानव जीवन को अच्छी जिंदगी जीने तरीके सिखाये है । यदि मानस की बातो को मानव अपने जीवन में उतार लेता है तो वह अपने जीवन में आये दुखो से लड़ सकता है । मानस हमें सिखाती है कि हमें, राम अपने माता -पिता की आज्ञा मानकर बनवास चले गए थे । और उन्होंने अपने मन में राज सिंहासन पर बैठने की इच्छा तक नहीं की । उसी प्रकार से हमें भी अपने माता पिता की आज्ञा मानकर उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए । जिस तरह से रामायण में सीता माता

पतिव्रता का धर्म निभाती है उसी प्रकार से हमारे देश की सभी स्त्रियों को भी पतिब्रता का पालन करना चाहिए । राम के चरित्र से ये पता लगता है कि सन्मार्ग पर चलना चाहिए तो रावण के चरित्र से यह पता लगता है की ऐसा नहीं करना चाहिए जैसा रावण ने अनीति का कार्य किया था ।

तुलसीदास चौपाई क्रमशः- १ ,२ ,३

१- एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ।।

सकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ।।

२- मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सबु तासू ।।

राय सुभाय मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुट सम कीन्हा ।।

३- कहि न जाइ कछु नगर बिभूति । जनु एतनिअ बिरंचि करतूती ।।

सब बिधि सब पुर लोग सुखारी । रामचंद मुख चंदु निहारी ।।

अनुसंधान के लिये ३० मई २०२१ को,

प्रोफेसर (डॉ) राजिंदर सिंह साहिल

हिंदी साहित्य

अनुसंधान पथप्रदर्शक

CT यूनिवर्सिटी लुधिआना पंजाब